प्रारम्भिक कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकों के साथ काम करने का अनुभव

सौरभ सोम, अर्चना द्विवेदी, मोनू कुमार और प्रमोद काण्डपाल

भारतीय कक्षाओं को अकसर इस बात के लिए दोषी ठहराया जाता कि वे पाठ्यपुस्तक द्वारा निर्धारित की जाती हैं *(कुमार, 1988)*। *शिक्षा बिना बोझ के (भारत सरकार, 1992)* रिपोर्ट ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षण-अधिगम की निराशाजनक स्थिति का अवलोकन किया। यह बताती है कि कक्षा में विद्यार्थियों को जिस तरह से पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, वह उनके लिए अर्थहीन और अप्रासंगिक दोनों होता है और इसलिए उनका बाल मन शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में नहीं जुड़ता। जिन एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों *(एनसीईआरटी, 2006, 2007)* को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 *(एनसीईआरटी, 2005)* के बाद तैयार और प्रकाशित किया गया, वे इस कमी को सम्बोधित करती हुई प्रतीत होती हैं।

इस लेख में हम अपने स्कूल में पहली और दूसरी कक्षा में एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों के इस्तेमाल का अपना अनुभव प्रस्तुत करेंगे।

पहले हम स्कूल के बारे में बताएँगे। फिर कक्षा में एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों की शुरुआत करने; कक्षा में हमारे सामने मौजूद शैक्षणिक चुनौतियों; कक्षा में हम जिन शिक्षणशास्त्रीय पहलुओं को स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे; एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों ने किस तरह से हमारे परिकल्पित शिक्षणशास्त्र को वास्तविकता में बदलने में मदद की और पाठ्यपुस्तकों की सीमाएँ आदि पहलुओं पर चर्चा करेंगे। अन्त में हमने अपने इस अनुभव से सीखे हुए सबक़ और भविष्य के काम की योजना पर भी चर्चा की है।

स्कूल का सन्दर्भ

अज़ीम प्रेमजी स्कूल उत्तराखण्ड के एक गाँव में स्थित है। यह स्कूल शिक्षा का अधिकार अधिनियम *(भारत सरकार, 2009)* के मानदण्डों और प्रकृति का पालन करते हुए प्राथमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु प्रतिबद्ध है। यहाँ के विद्यार्थी निम्न से मध्यम आय वर्ग के परिवारों से आते हैं और उनमें से कई विद्यार्थियों को घर में अकादमिक सहायता उपलब्ध नहीं होती।

यह स्कूल राज्य बोर्ड से सम्बद्ध है और 2012 में अपनी स्थापना के बाद से राज्य बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों का उपयोग कर रहा है। वर्तमान शैक्षिक वर्ष में उत्तराखण्ड सरकार ने सभी स्कूलों को एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों को लागू करने के लिए कहा है। राज्य शिक्षा विभाग ने पुस्तकों को राज्य स्तर पर छापा और उन्हें बाज़ार में उपलब्ध कराया। हालाँकि हमने ये पुस्तकें एनसीईआरटी प्रकाशन से सीधे ही ख़रीदीं और उन्हें विद्यार्थियों में वितरित किया।

पहली और दूसरी कक्षा में पढ़ाने का सन्दर्भ

हमने पहले उल्लेख किया है कि हमारे कई विद्यार्थियों को घर पर अकादमिक सहायता नहीं मिल पाती और उनमें से कई पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं। विद्यार्थियों की भाषा और पाठ्यपुस्तक की भाषा भी काफ़ी हद तक भिन्न होती है। इसलिए शिक्षकों को लगातार बहु-स्तरीय कक्षाओं की वास्तविकता को सम्बोधित करना पड़ता है और विद्यार्थियों के सीखने की गति सुनिश्चित करनी होती है। कई प्रयासों के बावजूद हमें लगा कि पहली और दूसरी कक्षा के अधिकांश विद्यार्थियों के अधिगम

स्तर को कक्षा के उपयुक्त स्तर तक लाना कठिन काम था।

हमारे स्कूल में निरन्तर शिक्षक पेशेवर विकास पहलक़दमियाँ और प्रक्रियाएँ होती रहती हैं। बतौर शिक्षक समुदाय, शिक्षा के बारे में हमारा दृष्टिकोण है कि शिक्षा को समस्या खड़ी करने वाली (Problem-posing), प्रामाणिक *(फ्रेरे, 1968)*, वास्तविक दुनिया से जुड़ी और विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक और अर्थपूर्ण होना चाहिए। शिक्षण योजनाओं में समूह कार्य, विद्यार्थियों की आवाज़ को शामिल करने और रचनात्मक मूल्यांकन *(ब्लैक एंड विलियम, 1998)* करने के अवसर होने चाहिए। शिक्षण इकाइयों को अलग-अलग विषयों के रूप में पेश करने के बजाए थीमों के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए *(डिवी, 1923)*। शोध साहित्य में विषय एकीकरण, समूह कार्य, मूल्यांकन और कक्षा-प्रबन्धन पर फोकस करते हुए पाठ्यक्रम को एनसीएफ़ 2005 *(एनसीईआरटी, 2005)* द्वारा निर्धारित अपेक्षाओं के साथ-ही-साथ भारतीय कक्षा की वास्तविकताओं के अनुकूल बनाने का सुझाव दिया गया है *(सोम और नटराजन, 2013)*। इस सन्दर्भ में हमने पाया कि एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकें हमारी कई चुनौतियों का समाधान प्रदान करती हैं और हमारे परिकल्पित शिक्षणशास्त्र के उपयुक्त हैं।

एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकें और शिक्षण-शास्त्र की परिकल्पना

शैक्षिक वर्ष की शुरुआत में जब हमने पहली और दूसरी कक्षा में पाठ्यपुस्तकों को काम में लाना शुरू किया तो हमने महसूस किया कि दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों को इसके साथ तालमेल बिठाने में मुश्किल हो रही है क्योंकि दूसरी कक्षा की पाठ्यपुस्तक लगातार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पहली कक्षा में सिखाई गई अवधारणाओं से सम्बन्धित थी। इसलिए हमने दोनों कक्षाओं को मिलाने और सभी विद्यार्थियों के समक्ष इन पाठ्यपुस्तकों को सिलसिलेवार प्रस्तुत करने का निर्णय लिया। इसके अतिरिक्त इस लेख के लेखकों ने इन कक्षाओं के सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकों को मिलकर पढ़ा और शिक्षण इकाइयों की योजना बनाई। इन शिक्षण इकाइयों में पाठ्यपुस्तकों के उपयोग के सम्बन्ध में आगे चर्चित पहलुओं पर ध्यान दिया गया।

समस्या खड़ी करना और गतिविधि आधारित शिक्षण

कुल मिलाकर, पाठ्यपुस्तकों के उपयोग से कक्षा में विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के लिए कई समस्याओं का समाधान हुआ। हमने पूरी कक्षा के साथ सभी गतिविधियाँ कीं जैसे पाठ्यपुस्तक से कविता पाठ करना, प्रश्नोत्तर आदि। कभी-कभी तो हम पहले पूरी कक्षा के सामने सभी गतिविधियों का प्रदर्शन करते और बाद में सवाल पूछते जैसे कि क्या तैरता है और क्या डूबता है? क्या भारी है और क्या हल्का है? गतिविधि-आधारित शिक्षण के तहत विद्यार्थियों ने कैलेण्डर बनाए, प्रत्येक कक्षा में कितने विद्यार्थियों को अण्डा पसन्द है और कितनों को दूध, कक्षाओं में दरवाज़ों और खिड़कियों की संख्या आदि विषयों पर आँकड़ों का संग्रहण किया और बाद में उन्होंने अपना काम बाल शोध मेले में प्रस्तुत किया। इसी तरह विद्यार्थियों ने गमलों में बीज बोए और दो महीने तक अंकुरण तथा पौधे की वृद्धि का अवलोकन किया।

पाठ के अन्त में दिए गए अभ्यास दिलचस्प हैं। अभ्यास करते समय विद्यार्थी पढ़ने, लिखने और अपने विचारों को तर्क के साथ प्रस्तुत करने में सक्षम होते हैं। अँगूठे की छाप, बूझो मेरा रंग, हाट का खेल, क्या भाता है, क्या नहीं भाता है जैसे पाठों ने विद्यार्थियों को खेलते समय सीखने के पर्याप्त अवसर प्रदान किए।

समूह कार्य

विद्यार्थियों को समूहों में काम करने के कई अवसर दिए गए। समूह कार्य का प्रमुख तरीक़ा पाठ्यपुस्तकों को पढ़ते समय इसमें दी गई समस्याओं को एक साथ मिलकर हल करना था।

पाठ को वास्तविक दुनिया से जोड़ना

पाठ्यपुस्तकों की सामग्री का वास्तविक दुनिया से भरपूर जुड़ाव है, विशेष रूप से गणित और हिन्दी में। उसमें दिए हुए चित्र विद्यार्थियों के अनुभवों

से सम्बन्धित हैं : रसोई, कक्षा-कक्ष, स्कूल, मध्यावकाश और गाँवों के दृश्य दिए गए हैं जिन्हें वे अपने आस-पास देखते रहते हैं। हिन्दी और गणित की पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त सभी शब्द सरल हैं और विद्यार्थी उनसे परिचित हैं। इससे न केवल विद्यार्थियों को विषय-सामग्री के साथ जुड़ने में मदद मिली, बल्कि इससे उन्हें अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने में भी मदद मिली। उदाहरण के लिए शुरुआती कक्षाओं में स्थानीय मान की अवधारणा को पढ़ाना हमेशा मुश्किल होता है। करेंसी नोटों और सिक्कों के उपयोग ने विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन के लेन-देन की स्थिति से जोड़कर अवधारणा को विकसित करने में मदद की। विद्यार्थियों ने यह बात समझी कि एक रुपए के दस सिक्के, दस रुपए के एक सिक्के या एक नोट के बराबर होते हैं।

इसी तरह अँग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तक में चक्कर देने वाले हिण्डोले (merry-go–round) का जाना-पहचाना उदाहरण है, जिसके बाद वृत्त पर एक पाठ है जो वृत्त का उपयोग करके विभिन्न छवियों को बनाने का अवसर प्रदान करता है और अन्त में अन्य आकृतियों का परिचय देता है।

गणित की पाठ्यपुस्तक में वास्तविक दुनिया की समस्याओं को पढ़ने और समझने पर ध्यान दिया गया है, जिसके लिए गणितीय संक्रियाओं या गणितीय सोच की आवश्यकता होती है। अधिकांश संख्यात्मक समस्याओं को सन्दर्भ के अनुसार और बहुत सारे टेक्स्ट के साथ प्रस्तुत किया गया है। यह विद्यार्थियों के पढ़ने और समझने के कौशल को भी बढ़ाता है, बशर्ते शिक्षक पढ़ने में विद्यार्थियों की मदद करें और उन्हें अपनी गति के हिसाब से पाठ्यपुस्तक की समस्याओं को हल करने दें। विद्यार्थियों के लिए इस बात की भी पर्याप्त गुंजाइश है कि वे ख़ुद सामग्री के साथ जुड़ें और आँकड़े एकत्र करें जैसे कि चटाई या अपनी कक्षा की लम्बाई को मापने के लिए अपने स्वयं के पैरों का उपयोग करना।

विषयों का एकीकरण

इस प्रकार गणित, हिन्दी और अँग्रेज़ी पाठ्यपुस्तकों में थीमगत समन्वय है। सभी पाठ्यपुस्तकों में पर्यावरण जागरूकता, संवेदनशीलता और सक्रियतावाद से जुड़े विषय हैं जो बाद में जाकर यानी तीसरी से पाँचवीं कक्षा में एक अलग विषय के रूप में पढ़ाए जाने वाले पर्यावरण अध्ययन के साथ जुड़ेंगे। मुख्य रूप से गणित में डूबने और तैरने, लुढ़कने और फिसलने के प्रकरण हैं और फिर दोनों भाषा की पाठ्यपुस्तकों में इनका उल्लेख है जिससे भौतिकी में बहुत जटिल या गूढ़ अवधारणाओं का विकास हो सकता है। अन्य उदाहरण कविताएँ हैं जो हमारे और अन्य जानवरों के जीवन में पेड़ों के महत्त्व को दिखाने के लिए हैं। अँग्रेज़ी और हिन्दी दोनों में कुछ अन्य विचार भी दिए गए हैं जैसे बीज बोना और पशुओं की देखभाल, गति, बादल, वर्षा, इन्द्रधनुष, विभिन्न प्रकार के घर, पशु और उनके शिशु तथा उनके निवास स्थान, परिवार, शरीर के अंग आदि।

अँग्रेज़ी और गणित दोनों में और कुछ हद तक हिन्दी में भी सामान्य अवधारणाएँ जैसे आकृति, अवस्थिति (location) का वर्णन करना : ऊपर, नीचे, निकट, दूर, अन्दर और बाहर आदि प्रस्तुत की गई हैं।

पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति और शैक्षणिक विधियों के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करने के अवसर प्रदान करती हैं। जैसे कविता को हाव-भाव के साथ गाना, कहानी सुनाना, रोल प्ले, कला और हस्तकौशल के काम (उदाहरण के लिए पेड़, इन्द्रधनुष, पतंग, फूल आदि बनाना), नाटक और खेल की तस्वीरें, मधुबनी और वरली जैसी कला विधाएँ आदि। एक प्रकार से देखा जाए तो यह शैक्षिक और सृजनात्मक क्षेत्र के पारम्परिक विचारों के बीच अन्तर को ख़त्म करता है।

मूल्यों और कौशलों को प्रोत्साहन देना

विषय-सामग्री और प्रस्तुति दोनों ही तरह से पुस्तक लोकतांत्रिक समाज के लिए आवश्यक मूल्यों से परिचित करवाती है। उदाहरण के लिए अँग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तक में एक दर्ज़ी एक सुअर से एक-दूसरे की मदद करने के बारे में बात करता है। एक अन्य कहानी में एक बाघ और एक मच्छर यह दिखाते हैं कि हर किसी में कुछ-न-कुछ विशेषता होती है और किसी को भी पूरी तरह से मज़बूत या कमज़ोर के रूप

में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता। पाठ्यपुस्तकों में कहानियाँ रचनात्मक सन्देशों के साथ समाप्त होती हैं। यह पाठ्यपुस्तक तर्क, अनुमान, विश्लेषण, अपने विचारों को अभिव्यक्त करने और कल्पना करने की क्षमता को बढ़ावा देने में मदद करती है।

लैंगिक सन्तुलन और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता

पाठ्यपुस्तक में लैंगिक सन्तुलन बनाए रखने की कोशिश की गई है, हालाँकि कहीं-कहीं अपवाद भी मिल जाते हैं, जैसे कि एक कविता में 'ए नाइस बॉय लाइक मी' का उल्लेख किया गया है, या पशुओं के बारे में बताते समय उन्हें अधिकतर *नर* (he) के रूप में इंगित किया गया है।

एक प्रभावी उपकरण के रूप में पाठ्यपुस्तकें

हमारे सन्दर्भ में अधिगम के लिए उपयुक्त और बने-बनाए साधन प्राप्त करना एक बड़ी चुनौती है। वैसे ये पाठ्यपुस्तकें आवश्यक सहायता प्रदान करती हैं और हमारे आस-पास के वातावरण में आसानी से उपलब्ध संसाधन भी सुझाती हैं। इसके अलावा, विभिन्न सामग्रियों को प्रस्तुत करते हुए पाठ्यपुस्तकों ने कक्षा में उपयोग के लिए समृद्ध साहित्य की उपलब्धता को औचित्य प्रदान किया है।

हिन्दी और अँग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तक में विशेष अक्षरों और शब्दों को परिचित करवाने पर स्पष्ट रूप से ध्यान दिया गया। उदाहरण के लिए हिन्दी पाठ्यपुस्तक में *आम की कहानी* नामक एक चित्र-कथा थी, जिसने विद्यार्थियों को चित्र-कथा के आधार पर अपने विचार व्यक्त करने, प्रश्न पूछने और जवाब देने के लिए सक्षम बनाया। पत्तियों पर एक और पाठ पढ़ाते हुए हमने स्कूल परिसर से विभिन्न प्रकार के पत्ते एकत्र किए, इसके बाद पत्तियों के आकार और उनकी भिन्नता पर चर्चा की और पुस्तक में लिखे नामों के साथ प्रत्येक की तुलना की, इस प्रकार उन्हें अक्षरों को पहचानने और पूरे शब्द का अनुमान लगाने में मदद मिली।

पाठ्यपुस्तक के बारे में समग्र टिप्पणियाँ

पाठ्यपुस्तक का डिज़ाइन ऐसा है जो अधिगम को आसान बनाता है। अक्षरों के फॉण्ट का आकार छोटे बच्चों के लिए उपयुक्त है। काग़ज़ की गुणवत्ता वर्कशीट के रूप में उपयोग करने के लिए काफ़ी अच्छी है। रंग संयोजन में विविधता है और प्रत्येक पाठ की थीम के साथ ठीक बैठता है।

पुस्तक की सामग्री और प्रस्तुति में रचनात्मक मूल्यांकन की गुंजाइश है। हमने विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त किए गए अधिगम के स्तर पर नज़र रखने के लिए एनसीईआरटी अधिगम के प्रतिफल सूचकों (एनसीईआरटी, 2017) का उपयोग किया है। विषयों को थीम, सामग्री, अवधारणाओं, कौशल और मूल्यों में एकीकृत करना शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के पाठ्यक्रम के बोझ को कम करता है। भाषा और गणित की पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों की रुचि बनाए रखने में मदद करती हैं और उन्हें बहुत सारी गतिविधियों, दिलचस्प लेकिन चुनौतीपूर्ण कार्यों तथा विचारों के एक नेटवर्क के रूप में बहुत गूढ़ अवधारणाओं को व्यवस्थित करती हैं जिससे विद्यार्थी सीखने में व्यस्त रहते हैं। परिणामस्वरूप हम प्रत्येक विषय के लिए हर दिन अपनी कक्षा की अवधि को डेढ़ घण्टे या उससे अधिक तक बढ़ा सके। कभी-कभी तो हम एक विषय के लिए पूरा दिन भी लगा देते थे।

अन्त में, यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि कोई भी एक पाठ्यपुस्तक विद्यालय अधिगम के किसी भी स्तर के लिए पर्याप्त नहीं है और एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकें भी इसका अपवाद नहीं हैं। हालाँकि, यह दिलचस्प बात है कि पाठ्यपुस्तक के रूप में विविध समृद्ध संसाधन प्राप्त हुए जिन्होंने शिक्षकों के सामने स्रोतों का एक संसार खोलकर रख दिया ताकि वे अपने शिक्षण में उनकी सहायता ले सकें और उन्हें कक्षा में ले जा सकें।

हमने इस लेख के शुरू में उल्लेख किया है कि अपने विद्यार्थियों और स्कूल के सन्दर्भ को देखते हुए पहली और दूसरी कक्षा के शुरुआती चरणों में अँग्रेज़ी पाठ्यपुस्तक को पढ़ाना हमारे लिए मुश्किल है। इन कक्षाओं में अँग्रेज़ी पाठ्यपुस्तकों का बेहतर रूप से उपयोग करने के लिए यह ज़रूरी है कि हमारे पास तृतीय भाषा शिक्षण का एक भली-

भाँति परिभाषित शैक्षणिक तरीक़ा हो। हम यह भी कहना चाहेंगे कि हमने आमतौर पर *प्रथम भाषा* के अलावा सभी भाषाओं के लिए *द्वितीय भाषा* शब्द का उपयोग किया है। इस लेख में हमने तृतीय भाषा शब्द का इस्तेमाल ऐसी भाषा के लिए किया है जो द्वितीय भाषा से भी काफ़ी दूर है, जो कि हमारे सन्दर्भ में हिन्दी है। हमारे विद्यार्थियों की प्रथम भाषा गढ़वाली है। हम अँग्रेज़ी को तृतीय भाषा मानते हैं क्योंकि यह माना जाता है कि विद्यार्थियों के पास इसके बेहद सीमित अनुभव हैं : उन्हें दैनिक वार्तालाप या उपयोग में अँग्रेज़ी व्याकरण सीखने और उपयोग करने का अवसर नहीं मिलता है।

भविष्य की योजनाएँ

इस लेख के लेखकगणों में से एक ने यह विचार प्रकट किया कि एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकें शुरुआत में भले ही कठिन लगती हों, लेकिन समय के साथ आगे बढ़ने का रास्ता दिखाती हैं और हम सभी इस बात से सहमत हैं। अगले शैक्षिक वर्ष के लिए हम पाठ्यपुस्तकों के लिए थीमपरक इकाइयों पर अधिक ध्यान देंगे, कक्षा में पढ़ाने के लिए कई शिक्षण इकाइयों को तैयार करने के साथ-साथ उसके लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम सामग्री की एक सूची तैयार करेंगे और ये सारे कार्य एनसीईआरटी अधिगम प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए किए जाएँगे।

आभार : हम खरुल निशा, कल्पना पँवार, और अल्पना माहोर को उनके सहयोग के लिए और अपने विद्यार्थियों को, हमें प्रयोग करने एवं सीखने में मदद करने के लिए धन्यवाद देते हैं।

References:

1. *Black, P. and Wiliam, D. (1998). Assessment and Classroom Learning. Assessment in Education: Principles, Policy & Practice, 5(1), 7-74.*
2. *Dewey, J. (1923). Democracy and Education. USA: Macmillan.*
3. *Freire. P. (1968). Pedagogy of the Oppressed. New York: Seabury.*
4. *Government of India (1992). Learning without Burden: Report of the national advisory committee. New Delhi: Ministry of Human Resource Development.*
5. *Government of India (2009). The Right of Children to Free and Compulsory Education Act 2009. New Delhi: Government of India.*
6. *Kumar, K. (1988). Origin of India's Textbook Culture. Comparative Education Review, 32 (4), 452-464.*
7. *NCERT (2006, 2007). Textbooks of Class I and II. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.*
8. *NCERT (2005). National Curriculum Framework. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.*
9. *NCERT (2017). Learning Outcome Indicators for Elementary Level. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.*
10. *Shome and Natarajan (2013). Ideas and Attitudes towards Projects and Changing Practices: Voices of four teachers. Australian Journal of Teacher Education, 38(10), 64-81.*

सौरभ सोम सम्प्रति अज़ीम प्रेमजी स्कूल से जुड़े हुए हैं। उनके वर्तमान शोध कार्यों में परियोजना आधारित शिक्षण, शिक्षक पेशेवर विकास और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा शामिल हैं। उनसे saurav.shome@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अर्चना द्विवेदी पिछले एक साल से अज़ीम प्रेमजी स्कूल में विज्ञान और अँग्रेज़ी पढ़ा रही हैं। अज़ीम प्रेमजी स्कूल से पहले उन्होंने पाँच वर्षों तक केन्द्रीय विद्यालय में विज्ञान पढ़ाया। वे विद्यार्थियों के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री बनाने में रुचि रखती हैं। उनसे archana.dwivedi@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

मोनू कुमार पूर्व प्राथमिक स्तर पर पढ़ाते हैं। वे उच्च प्राथमिक स्तर पर संस्कृत भी पढ़ाते हैं। वे समाजोपयोगी उत्पादक कार्य और शारीरिक शिक्षा में रुचि रखते हैं। उनसे monu.kumar@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

प्रमोद काण्डपाल पूर्व प्राथमिक स्तर पर पढ़ाते हैं। पुस्तकालय से सम्बन्धित कार्यों में उनकी रुचि है। उनसे pramod.kandpal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल **पुनरीक्षण :** कामिनी उपाध्याय